भजन

हजुर हमको इतना ना तरसाईयेगा
अजी हम तुम्हारे है अपनाईयेगा

1) यह माना कि मैने, खतावार हूँ मैं
कि फिर भी तुम्हारी, तलबगार हूँ मैं
वो नूरी नजारा दिखलाईयेगा –2

2) जो दिल में है होठो पे, लाना भी मुश्किल
मगर उसको दिल में, छिपाना भी मुश्किल
नजर की जुबा से समझाईयेगा–2

3) ये कैसा नशा है, ये कैसी अदा है
रुहे पिया पर तो, पल पल फिदा है
वो इश्क–ए–नशा हमको पिलवाईयेगा–2

4) यह माना पिया हम, गुन्हेगार तेरे
है नीचों में नीच, अब ना काबिल हूं तेरे
मगर फिर भी चरणों में बिठलाईयेगा–2